भारत में अब न्यूजीलैंड की वाइन और कीवीफ्रूट जैसे सामान हो जाएंगे सस्ते

भारत और न्यूजीलैंड के बीच फ्री ट्रेड एग्रीमेंट साइन हुआ, 5000 भारतीयों को वर्किंग वीजा मिलेगा, अब न्यूजीलैंड अगले 15 साल में भारत में 1.8 लाख करोड़ रुपए का करेगा निवेश

● नई दिल्ली / राज न्यूज नेटवर्क

भारत-न्यूजीलैंड के बीच सोमवार 27 अप्रैल को फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (एफटीए) साइन हो गया है। अब भारत से न्यूजीलैंड भेजे जाने वाले लेदर प्रोडक्ट्स, टेक्सटाइल, प्लास्टिक और इंजीनियरिंग गुड्स जैसे सामानों पर कोई एक्सपोर्ट ड्यूटी नहीं लगेगी। जिससे इन श्रम-प्रधान क्षेत्रों यानी लेबर इंटेंसिव सेक्टर्स को सीधा लाभ होगा।

न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन ने इसे एक पीढ़ी में एक बार होने वाला समझौता बताया। वहीं मिनिस्टर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री पीयूष गोयल ने इसे भारत-न्यूजीलैंड आर्थिक संबंधों में नए अध्याय की शुरुआत बताया है। पीयूष गोयल ने कहा कि यह एफटीए विश्वास, साझा मूल्यों और टिकाऊ आर्थिक विकास के साझा विजन को दर्शाता है। यह समझौता भारत के लिए ओशिनिया और प्रशांत द्वीपीय बाजारों तक पहुंचने का गेटवे भी बनेगा। एग्रीमेंट का मुख्य उद्देश्य दोनों देशों के बीच बाइलेटरल ट्रेड को दोगुना करना और भारत में बड़े विदेशी निवेश को आकर्षित करना है। एग्रीमेंट के तहत न्यूजीलैंड से अगले 15 साल में भारत में 20 बिलियन डॉलर (करीब 1.8 लाख करोड़ रुपए) का निवेश आने की उम्मीद है। पीयूष गोयल ने कहा कि इस समझौते से भारतीय व्यापारियों, विशेषकर आगरा के लेदर एक्सपोर्टर्स के लिए बड़े अवसर खुलेंगे।

सर्विस सेक्टर में भारत ने आईटी, शिक्षा, फाइनेंशियल सर्विसेज, कंस्ट्रक्शन और टूरिज्म जैसे हाई-वैल्यू सेक्टरों में बाजार पहुंच हासिल की है। समझौते के तहत AYUSH, योगा इंस्ट्रक्टर्स, इंडियन शेफ और म्यूजिक टीचर्स के लिए भी रास्ते खुलेंगे। एफटीए में एक नया टेम्परेरी एम्प्लॉयमेंट एंट्री वीजा का रास्ता बनाया गया है। इसके तहत हर साल 5,000 भारतीय स्किल्ड प्रोफेशनल्स न्यूजीलैंड में 3 साल तक काम कर सकेंगे। इंजीनियरिंग, हेल्थकेयर और एजुकेशन सेक्टर में खासतौर पर मौके होंगे। इसके अलावा भारतीय वाइन और स्पिरिट्स को भी न्यूजीलैंड के बाजार में ड्यूटी फ्री एक्सेस मिलेगा।

न्यूजीलैंड को कृषि उत्पादों पर रियायत

न्यूजीलैंड को भारतीय बाजार में पहुंच देने के लिए भारत ने अपनी 70 प्रतिशत टैरिफ लाइन्स खोल दी हैं। इसमें सेब, कीवीफ्रूट और मनुका हनी जैसे कृषि उत्पादों पर टैरिफ रियायतें दी गई हैं, लेकिन ये कोटा लिमिट और मिनिमम इम्पोर्ट प्राइस की शर्तों के साथ होंगी। इसके अलावा न्यूजीलैंड को भारत में अपने 54 प्रतिशत से ज्यादा एक्सपोर्ट पर तुरंत शून्य ड्यूटी मिलेगी। इसमें शीप मीट, ऊन, कोयला और फॉरेस्ट्री प्रोडक्ट्स शामिल हैं। सीफूड, आयरन, स्टील और एल्युमीनियम स्क्रैप पर टैरिफ को अगले 10 सालों में धीरे-धीरे खत्म किया जाएगा। हालांकि, भारत ने अपने घरेलू हितों की रक्षा के लिए डेयरी उत्पादों (दूध, क्रीम, पनीर आदि), प्याज, दालें, चीनी, आर्म्स-अम्युनिशन और कुछ मेटल्स जैसे संवेदनशील क्षेत्रों को रियायतों की लिस्ट से बाहर रखा है।

पीएम बोले- किसानों, युवाओं और एमएसएमई को होगा बड़ा फायदा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को भारत-न्यूजीलैंड मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) को दोनों देशों की साझेदारी में एक ऐतिहासिक क्षण बताया। उन्होंने कहा कि यह समझौता किसानों, युवाओं, महिलाओं, एमएसएमई, स्टार्टअप और छात्रों सहित अन्य वर्गों को काफी फायदा पहुंचाएगा। मोदी ने यह भी कहा कि न्यूजीलैंड की 20 अरब डॉलर निवेश की प्रतिबद्धता कृषि, मैन्यूफैक्चरिंग, इनोवेशन और प्रौद्योगिकी में द्विपक्षीय सहयोग को और मजबूत करेगी। इससे दोनों देशों के लिए ज्यादा समृद्ध और गतिशील भविष्य का रास्ता खुलेगा। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, आज भारत-न्यूजीलैंड साझेदारी में एक ऐतिहासिक क्षण है। मुझे खुशी है कि आज हस्ताक्षर किये गये भारत-न्यूजीलैंड एफटीए हमारी विकासात्मक साझेदारी को अभूतपूर्व गति देगा। यह उस मजबूत भरोसे, साझा मूल्यों और महत्वाकांक्षा को दर्शाता है, जो हमारे दोनों देशों को जोड़ते हैं। उन्होंने कहा, यह समझौता हमारे किसानों, युवाओं, महिलाओं, एमएसएमई, कारीगरों, स्टार्टअप, छात्रों और इनोवेशन करने वालों को बहुत फायदा पहुंचाएगा। यह विकास के नए रास्ते खोलेगा, अवसर पैदा करेगा और विभिन्न क्षेत्रों में हमारे तालमेल को मजबूत करेगा।

फार्मा और आईटी शेयरों में खरीदारी से बाजार में तीन दिन बाद आई तेजी

सेंसेक्स उछलकर 76,664 पर पहुंचा, निफ्टी 24092 पर बंद

● मुंबई / राज न्यूज नेटवर्क

एशियाई बाजारों में पॉजिटिव रुख के बीच भारतीय शेयर बाजार हफ्ते के पहले ट्रेडिंग सेशन यानी सोमवार 27 अप्रैल को मजबूती के साथ बंद हुए। तिमाही नतीजों के दम पर फार्मा और आईटी शेयरों के साथ रियल्टी स्टॉक्स में खरीदारी से बाजार चढ़कर बंद हुआ।

रिलायंस इंडस्ट्रीज (आरआईएल) के शेयरों में भी तेजी से भी बाजार को मजबूत सपोर्ट मिला। साथ ही ईरान के होरमुज स्ट्रेट को फिर से खोलने के प्रस्ताव के साथ अमेरिका से संपर्क किया है। इन रिपोर्ट्स का निवेशकों के सेंटीमेंट्स पर पॉजिटिव असर पड़ा। तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 76,856 अंक पर खुला। शुक्रवार को यह 76,664 पर बंद हुआ था। कारोबार के दौरान यह 77,420 अंक तक चढ़ गया था। अंत में यह 639.42 अंक या 0.83 फीसदी की बढ़त लेकर 77,303.63 पर ट्रेड कर रहा था। इसी तरह, नैशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी-50 23,945 पर खुला और खुलते ही 24 हजार के पार चला गया। कारोबार के दौरान यह 24,130 अंक के इंट्रा-डे हाई तक गया। अंत में यह 194.75 अंक या 0.81 प्रतिशत चढ़कर 24,092 पर बंद हुआ। जियोजित इंवेस्टमेंट्स में रिसर्च हेड विनोद नायर ने कहा, निवेशकों की भावना में सुधार का कारण अमेरिका-ईरान वार्ता फिर से शुरू होने की उम्मीद और वित्त वर्ष 2026 की चौथी तिमाही के उम्मीद से बेहतर नतीजे रहे। हालांकि कच्चे तेल की कीमतें 100 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर बनी हुई हैं और बाजार होरमुज़ स्ट्रेट के खुलने की संभावनाओं का आकलन कर रहे हैं। लेकिन घरेलू मांग आधारित सेक्टर खासकर बैंकिंग, एफएमसीजी, कैपिटल गुड्स, कंज्यूमर डिस्क्रेशनरी और मैन्युफैक्चरिंग से जुड़े कारोबार ने रिकवरी को सहारा दिया। उन्होंने कहा कि आईटी सेक्टर ने भले ही कमजोर नतीजे दिए हों, लेकिन वैल्यूएशन के लिहाज से आकर्षण और लॉन्ग टर्म निवेश नजरिए के चलते इसमें निवेशकों की दिलचस्पी बनी रही। आगे चलकर, अमेरिकी फेडरल रिजर्व की नीति घोषणा, खासकर मध्यम अवधि में ब्याज दरों की दिशा पर बाजार की नजरें टिकी रहेंगी।

किन कंपनियों को फायदा और किसे नुकसान

सेंसेक्स की कंपनियों में सन फार्मा के शेयर टॉप गेनर रहा। इसमें लगभग 7 फीसदी की तेजी आई। इसके अलावा रिलायंस इंडस्ट्रीज, अदाणी पोर्ट्स, एनटीपीसी, टेक महिंद्रा, टीसीएस, महिंद्रा एंड महिंद्रा, एचसीएल टेक, कोटक बैंक, इंफोसिस प्रमुख रूप से लाभ में रहे। दूसरी तरफ, एक्सिस बैंक, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, ट्रेंट लिमिटेड, आईसीआईसीआई बैंक, इटरनल के शेयर गिरावट में रहे। ब्रोडर बाजारों ने बेंचमार्क इंडेक्स से बेहतर प्रदर्शन किया। निफ्टी मिडकैप और निफ्टी स्मॉलकैप इंडेक्स क्रमशः 1.47 प्रतिशत और 1.90 प्रतिशत की बढ़त के साथ बंद हुए। सेक्टर के लिहाज से निफ्टी फार्मा, निफ्टी रियल्टी और निफ्टी आईटी ने बेहतर प्रदर्शन किया। वहीं, निफ्टी प्राइवेट बैंक और निफ्टी फाइनेंशियल सर्विसेज कमजोर रहे।

चावल, गेहूं के भाव बढ़े और खाद्य तेलों में नरमी

● नई दिल्ली / राज न्यूज नेटवर्क

घरेलू थोक जिंस बाजारों में सोमवार को चावल का औसत भाव बढ़ गया। चावल के साथ गेहूं में भी तेजी देखी गयी। चीनी और खाद्य तेलों के भाव टूट गये जबकि दालों के दामों में घट-बढ़ रही। औसत दर्जे के चावल की औसत कीमत दो रुपये बढ़कर 3,849 रुपये प्रति क्विंटल पर पहुंच गयी। गेहूं चार रुपये महंगा हुआ और 2,784 रुपये प्रति क्विंटल बोला गया।

आटे की कीमत 10 रुपये घट गयी। दाल-दलहनों में उतार-चढ़ाव रहा। तुअर दाल और मसूर दाल की औसत कीमत 23-23 रुपये प्रति क्विंटल बढ़ गयी। उड़द दाल 14 रुपये महंगी हुई। मूंग दाल में 33 रुपये और चना दाल में 11 रुपये प्रति क्विंटल की गिरावट देखी गयी। मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में जुलाई का पाम ऑयल वायदा 62 रिंगिट टूटकर 4,535 रिंगिट प्रति टन रह गया। जुलाई का अमेरिकी सोया तेल वायदा भी 0.42 प्रतिशत नीचे 71.03 सेंट प्रति पौंड के भाव बोला गया। स्थानीय बाजारों में सोया तेल की औसत कीमत 92 रुपये और सूरजमुखी तेल की 67 रुपये प्रति क्विंटल गिर गयी।

सन फार्मा करेगी अमेरिकी दवा कंपनी का अधिग्रहण

ऑर्गानॉन कंपनी का 3.99 अरब डॉलर में हुआ समझौता

● मुंबई / राज न्यूज नेटवर्क

भारतीय दवा कंपनी सन फार्मा इसी क्षेत्र की अमेरिकी कंपनी ऑर्गानॉन का 3.99 अरब डॉलर में अधिग्रहण करेगी। दोनों कंपनियों की संयुक्त प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि इस संबंध में पक्का समझौता हो गया है।

यह अधिग्रहण सन फार्मा की एक पूर्ण स्वामित्व वाली विदेशी सहयोगी कंपनी के माध्यम से किया जायेगी। इस सौदे के तहत ऑर्गानॉन के शेयरधारकों को प्रति इक्विटी शेयर 14 डॉलर का भुगतान किया जायेगा। इस घोषणा के बाद सन फार्मा का शेयर आज सात प्रतिशत चढ़कर 1,733 रुपये पर पहुंच गया। ऑर्गानॉन का वर्तमान उद्यम मूल्यांकन 11.75 अरब डॉलर है। पिछले साल उसका राजस्व 6.2 अरब डॉलर और परिचालन लाभ 1.9 अरब डॉलर रहा था। कंपनी पर 31 दिसंबर 2025 को 8.6 अरब डॉलर का कर्ज था और उसके पास 57.4 करोडॉ डॉलर की नकदी थी।

एनपीएस में सीधे बैंक खाते में आएगा मेडिकल भत्ता

बिना बिल जमा किए हर तिमाही सीधे आपके बैंक खाते में पैसा आ जाएगा

● नई दिल्ली / राज न्यूज नेटवर्क

केंद्र सरकार ने नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) से जुड़े पेंशनभोगियों और उनके परिवारों के लिए प्रक्रिया को आसान बना दिया है। अब फिक्स्ड मेडिकल अलाउंस (एफएमए) यानी चिकित्सा भत्ता पाने का सिस्टम आसान और ऑटोमैटिक कर दिया गया है।

वित्त मंत्रालय ने 16 अप्रैल को जारी अपने नए आदेश में प्रक्रिया को आसान बना दिया है। अब बुजुर्ग पेंशनर्स को फिक्स्ड मेडिकल अलाउंस (एफएमए) के लिए न तो बार-बार मेडिकल बिल जमा करने पड़ेंगे और न ही दफ्तरों के चक्कर लगाने होंगे। पूरी व्यवस्था बैंक के जरिए होगी और यह भत्ता सीधे उनके बैंक खाते में आ जाएगा। मंत्रालय ने आदेश में बताया है कि अब इस भत्ते का भुगतान बैंकों के सेंट्रल पेंशन प्रोसेसिंग सेंटर (सीपीपीसी) के जरिए होगा। यह सिस्टम पूरी तरह ऑटोमैटिक रहेगा, इसलिए पेंशनर्स को कोई बिल या दावा देने की जरूरत नहीं होगी। प्रक्रिया ऐसी होगी कि सेंट्रल पेंशन एकाउंटिंग ऑफिस (सीपीएओ) पहले एलिजिबिलिटी की जांच करेगा और मंजूरी मिलने पर बैंक को स्पेशल सील अथॉरिटी (एसएसए) जारी करेगा। इसके आधार पर बैंक का सीपीपीसी डिपार्टमेंट तय दर के अनुसार हर तीन महीने में मेडिकल भत्ते की राशि सीधे लाभार्थी के बैंक खाते में जमा कर देगा।

सरकार ने भले ही बिल जमा करने की प्रक्रिया खत्म कर दी है, लेकिन एक जरूरी नियम अब भी लागू रहेगा।

मृत्यु के बाद परिवार के लिए क्या है नियम

सरकार ने परिवारों के लिए प्रक्रिया भी आसान रखी है। अगर किसी पेंशनर्स की मृत्यु हो जाती है और पात्र परिवार के सदस्य का नाम पहले से दर्ज है, तो वे मृत्यु प्रमाण पत्र के साथ सीधे बैंक में आवेदन कर सकते हैं और उन्हें मेडिकल भत्ता मिलना शुरू हो जाएगा। वहीं, अगर नाम रिकॉर्ड में नहीं है, तो संबंधित डिपार्टमेंट के जरिए नई मंजूरी लेनी होगी। इसके अलावा, पेंशनभोगियों के पास यह विकल्प भी है कि वे फिक्स्ड मेडिकल अलाउंस (एफएमए) की जगह सीजीएचएस की ओपीडी सुविधा चुन सकते हैं। इस व्यवस्था में बैंक पहले भत्ते का भुगतान करेंगे और बाद में सरकार उन्हें इसकी प्रतिपूर्ति करेगी। इसका मकसद प्रक्रिया को आसान बनाना और पेंशनभोगियों को कागजी झंझट से राहत देना है।

रुपया 14.50 पैसे हुआ मजबूत

मुंबई (एजेंसी)। अंतरबैंकिंग मुद्रा बाजार में रुपया सोमवार को एक पैसा मजबूत हुआ और कारोबार की समाप्ति पर एक डॉलर 94.15 रुपये का बोला गया। भारतीय इससे पहले लगातार पांच दिन गिरावट में रही थी। इन पांच दिनों में यह 125 पैसे टूट गयी थी। पिछले कारोबारी दिवस पर यह 14.50 पैसे उतरकर 94.16 रुपये प्रति डॉलर पर बंद हुई थी।

रुपया आज सुबह के कारोबार में कमजोर खुला था। यह नौ पैसे गिरकर 94.25 रुपये प्रति डॉलर पर खुला। बीच कारोबार में नीचे 94.29 रुपये और ऊपर 94.11 रुपये प्रति डॉलर तक गया। अंत में 94.15 रुपये प्रति डॉलर पर बंद हुआ। विदेशी संस्थागत निवेशकों ने आज भारतीय पूंजी बाजार में बड़ी निकासी की।

ओरेकल 30 साल से काम कर रहे कर्मचारियों को निकाला

● नई दिल्ली / राज न्यूज नेटवर्क

टेक जगत की नामी कंपनी ओरेकल में इन दिनों छंटनी का दौर चल रहा है, लेकिन इस बार का तरीका काफी हैरान करने वाला है।

रिपोर्ट के अनुसार, कंपनी ने उन अधिकारियों को भी नहीं बख्शा जिन्होंने अपनी जिंदगी के 30 से 33 साल इस संस्थान को दिए थे। एक झटके में दशकों पुरानी वफादारी को दरकिनार कर इन अनुभवी कर्मचारियों को बाहर का रास्ता दिखा दिया गया। जब 1 अप्रैल को सुबह 6 बजे ईमेल के जरिए दुनियाभर के 30 हजार कर्मचारियों की छंटनी की गई तो, उनमें से एक मेल नीना लुईस के पास भी पहुंचा, जो एक सुरक्षा प्रोफेशनल्स हैं जिन्होंने ओरेकल में 33 से ज्यादा का समय बिताया है। लुईस ने लिंक्डइन पर पोस्ट किया कि ओरेकल में 30 साल से अधिक साल के बाद, आज मुझे भी लगभग 30,000 लोगों की तरह नौकरी से निकाल दिया गया है। मेरे कई बेहतरीन सहकर्मी को भी नौकरी से निकाल दिया गया है। उन्होंने इस बात पर अटकलें लगाना शुरू कर दिया कि हायरिंग कैसे हो रही होगी।

अहमदाबाद मंडल के 4 कर्मचारी संरक्षा पुरस्कार से सम्मानित

● अहमदाबाद / राज न्यूज नेटवर्क

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक रामाश्रय पाण्डेय ने अहमदाबाद मंडल के चार कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट कार्य, सतर्कता एवं सुरक्षित ट्रेन संचालन में महत्वपूर्ण योगदान के लिए मैन ऑफ द मन्थ (फरवरी-2026) संरक्षा पुरस्कार से सम्मानित किया। प्रभाष कुमार यादव ने अपनी ड्यूटी के दौरान दो अलग-अलग अवसरों पर उच्च स्तर की सतर्कता का परिचय दिया। सुबोध कुमार ने ड्यूटी के दौरान गुजरती ट्रेन के एक वैगन में हैंगिंग पार्ट (सेफ्टी रॉड) देखा। उन्होंने तुरंत लाल संकेत देकर ट्रेन को रुकवाने की प्रक्रिया शुरू की और स्टेशन मास्टर को सूचित किया।

दीपक कुमार एस. ने रोलिंग एग्जामिनेशन के दौरान वैगनों में गंभीर तकनीकी दोष जैसे ग्रीस सील का खिसकना एवं सीटीआरबी कप का टूटना समय रहते पहचाना। वहीं, दीपक कुमार ने ड्यूटी के दौरान यह पाया कि एक ट्रेन निर्धारित 20 किमी/घंटा की गति सीमा से अधिक गति से चल रही थी। उन्होंने तत्परता दिखाते हुए लाल झंडा दिखाकर ट्रेन को रोका। उनकी सजगता एवं कर्तव्यनिष्ठा के कारण संभावित खतरे को टालना संभव हुआ। इन सभी कर्मचारियों की सतर्कता, तत्परता एवं कर्तव्यनिष्ठा भारतीय रेलवे की संरक्षा संस्कृति को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पश्चिम रेलवे को इन पर गर्व है।

MANAPPURAM FINANCE LTD.
CIN : L65910KL1992PLC006623
Registered Office: W - 4/ 638A, Manappuram House, P.O. Valapad, Thrissur - 680 567, Kerala, India

निलामी सूचना

विशेषकर गिरवीकर्ताओं और सामान्य रूप में जनता को एतद्द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित अकाउंट्स में रखे गए सोने के आभूषणों की सार्वजनिक नीलामी निम्नलिखित शाखाओं पर दिनांक 16/05/2026 को सुबह 10.00 बजे से किया जाएगा. हम ऐसे डिफॉल्टर ग्राहकों के सोने के आभूषणों की नीलामी करने जा रहे हैं जिन्होंने रजिस्टर्ड पत्र द्वारा सूचित किए जाने के बावजूद अपने लोन की रकम नहीं चुकाई है. जिन आयटम्स की नीलामी नहीं हो पाएगी, उनकी नीलामी किसी अन्य दिन बिना पुनः सूचना दिए की जाएगी. नीलामी के स्थान व तिथि (अगर कोई हो) में परिवर्तनों की कोई सूचना नीलामी केन्द्र या वेबसाइट पर लगाई जाएगी तथा इस बारे में कोई अन्य सूचना नहीं दी जाएगी.

गिरवियों की सूची :

जबलपुर, इंदिरा मार्केट जबलपुर, 0125710700024272, कटनी, कटनी, 0136140700009398, सतना, सतना, रीवा रोड सतना, 0128170700023468, 3514, 0128170730091432, 1433, 1712, 1909, 4868,

ऊपर बताई गई नीलामी में हिस्सा लेने के इच्छुक व्यक्तियों को नीचे दी गई बातों का पालन करना होगा: इच्छुक बोली लगाने वालों को नीलामी के दिन ही एनईएफटी/आरटीजीएस के जरिए 10,000/- रुपये ईएमडी (जो बोली हारने वालों को वापस कर दिया जाएगा) जमा करना होगा। बोली लगाने वालों के पास वैध आईडी कार्ड/पैन कार्ड होना चाहिए। ज़्यादा जानकारी के लिए कृपया 9072607147 पर संपर्क करें।

अधिकृत अधिकारी
मणप्पुरम फायनेंस लि. हेतु.

उपलब्धि पतंजलि के प्रयोग से उत्तर भारत में चंदन की खेती को मिली दिशा

पतंजलि ने दिखाई चंदन वन की राह

● हरिद्वार / राज न्यूज नेटवर्क

देश में चंदन की खेती लंबे समय तक दक्षिण भारत तक सीमित मानी जाती रही, लेकिन अब यह धारणा बदल रही है। उत्तराखंड में पतंजलि की ओर से विकसित चंदन वनद्य मॉडल ने साबित किया है कि अनुकूल परिस्थितियों में उत्तर भारत में भी चंदन की सफल खेती संभव है। प्रदेश के कई जिलों में इसके सकारात्मक उदाहरण सामने आ चुके हैं।

हरिद्वार स्थित पतंजलि के महामंत्री आचार्य बालकृष्ण ने करीब दो दशक पहले चंदन की खेती पर प्रयोग शुरू किए थे। उस समय उत्तर भारत में इसकी खेती लगभग न के बराबर थी। पतंजलि के रिसर्च सेंटर और औषधीय उद्यान में लगाए गए चंदन के पौधों पर किए गए अध्ययन में सकारात्मक परिणाम मिले, जिसके बाद राज्य के कई जिलों में किसानों और निजी संस्थाओं ने इस मॉडल को अपनाना शुरू कर दिया। विशेषज्ञों के अनुसार चंदन एक अर्ध-परजीवी वृक्ष है, जिसकी वृद्धि के लिए अन्य पौधों की जड़ों से पोषण आवश्यक होता है। इसलिए इसकी खेती वैज्ञानिक पद्धति और उचित प्रबंधन पर निर्भर करती है।

आचार्य बालकृष्ण की खोज से शुरू हुई पहल

आचार्य बालकृष्ण ने अब से कई वर्ष पहले उत्तराखंड के मणिकूट पर्वत पर चंदन की मौजूदगी से जुड़े एक समाचार को पढ़ने के बाद इसकी संभावनाओं की पड़ताल की। दरअसल, समाचार में जिक्र था कि मणिकूट पर्वत की पहाड़ियों पर कभी चंदन होता था और इसे नदी के रास्ते यूपी के कन्नौज तक भेजा जाता था। इसकी सत्यता जानने के लिए आचार्य बालकृष्ण और उनकी टीम निकली। वैज्ञानिक जांच-पड़ताल के बाद बाद यह बात सामने आई कि चंदन के पेड़ की मौजूदगी इस क्षेत्र में रही है लेकिन गिनती भर की।

आवास फाइनेंसियर्स लिमिटेड
(CIN: L65922RJ2011PLC034297) पंजीकृत एवं निगमित कार्या.: 201-202, द्वितीय मंजिल, साउथ एंड स्क्वायर, मानसरोवर इंडस्ट्रीयल एरिया, जयपुर-302020

Aavas FINANCIERS LTD. SAPNE AAPKE, SAATH HAMAARA

निविदा सूचना

वित्तीय आस्तियों के प्रतिभूतिकरण व प्रतिभूतिहित प्रवर्तन अधिनियम 2002 के शर्त व नियम 8 (6) के अन्तर्गत अचल सम्पत्ति की नीलामी विक्रय सूचना
आमजन तथा एवं व्यक्ति विशेष देनदारों तथा जमानती को सूचित किया जाता है कि निम्न उल्लेखित प्रत्याभूत ऋणदाता की गिरवी / प्रभारित अचल सम्पत्ति, जिसका भौतिक कब्जा आवास फाइनेंसियर्स लिमिटेड के प्राधिकृत अधिकारी द्वारा लिया गया था, प्रत्याभूत ऋणदाता "जैसे है जहाँ है" जो भी और जैसा भी है के आधार पर विक्रय करने जा रहे हैं। प्रकरणों का विशेष विवरण इस प्रकार हैं-

ऋणी/सह-ऋणी/जमानती/ बंधककर्ता का नाम	बकाया राशि दिनांक	13(2) डिमांड नोटिस की राशि व दिनांक	कब्जे की दिनांक	संपत्ति का विवरण (प्रतिभूति आस्ति)	संपत्ति का आरक्षित मूल्य	संपत्ति की धरोहर राशि	निविदा खोले जाने की तिथि व समय	निविदा खोलने, जमा कराने व नीलामी का स्थान आवास फाईनेंसियर्स लि.
नवीन कुमारी तिवाड़ी, नवीता तिवाड़ी, प्रवीण कुमार तिवाड़ी **खाता सं. : LNJAB00721-220206277**	₹ 24,50,483.00/- बकाया दिनांक 27 अप्रैल 2026	5 अक्टूबर 2024 ₹ 1801787/- बकाया दिनांक 4 अक्टूबर 2024	20 दिसम्बर 2024	प्लॉट नं. 414, खसरा नं. 152/1, नया केएच नं. 152/1/26 का हिस्सा एन.बी. 660, पीएच नं. 25, मौजा माधोताल, वार्ड नं. 30 पंडित दीनदयाल उपाध्याय वार्ड तहसील अधरताल व जिला जबलपुर, राम मंदिर के पास, त्रिमूर्ति नगर, जबलपुर मध्य प्रदेश (भारत)-482001/ **क्षेत्रफल 894 वर्ग फीट**	₹ 951091/-	₹ 95109/-	प्रातः11 बजे से दोपहर 1 बजे तक दिनांक 14 मई 2026	तीसरी मंजिल, दिगम्बर टॉवर, चंचला बाई कॉलेज के पास, राईट टॉउन, जबलपुर-482001 , मध्य प्रदेश-भारत

निविदा की शर्तें : 1. निविदा में सहभागिता करने हेतु इच्छुक खरीदार अपनी निविदा शाखा में उपलब्ध निविदा प्रपत्र जो कार्य दिवस के समय शाखा से प्राप्त किये जा सकते हैं, में अपने द्वारा निवेदित मूल्य लिखकर सीलबंद लिफाफे में जिसके ऊपर "टेण्डर ऑफर सम्पत्ति का विवरण" लिखा हो के साथ उपरोक्त वर्णित धरोहर राशि के चैक/बैंकर्स चैक/मॉग ड्राफ्ट जो कि प्राधिकृत अधिकारी, आवास फाईनेंसियर्स लिमिटेड के पक्ष में जयपुर में देय हो, नीलामी से पहले कार्य दिवस के दौरान आवास फाईनेंसियर्स लिमिटेड के उपरोक्त पते पर जमा करा कर निविदा में भाग ले सकते हैं। प्राप्त निविदाएं आवास फाईनेंसियर्स लिमिटेड के उपरोक्त पते पर उपस्थित निविदाकर्ताओं के समक्ष खोली जावेगी। इसके पश्चात निविदाकर्ताओं के बीच खुली बोली लगवाने का विकल्प प्राधिकृत अधिकारी के पास सुरक्षित है। यदि बोली सफल नहीं होती है तो असफल निविदाकर्ताओं को उसी दिन धरोहर राशि लौटा दी जायेगी। 2. सफल निविदाकर्ता को 25 प्रतिशत राशि (धरोहर राशि सहित) प्राधिकृत अधिकारी के द्वारा सफल निविदाकर्ता के नाम की उद्घोषणा करने के तुरन्त पश्चात, जमा करवाना होगा तथा शेष राशि विक्रय की पुष्टि के दिन से 15 दिन के अन्दर जमा कराना आवश्यक है, अन्यथा जमा राशि बिना सूचना बैंक में जब्त समझी जायेगी। 3. प्राधिकृत अधिकारी को बिना कोई कारण बताये बोली स्वीकार अथवा अस्वीकार करने या निविदा स्थगित करने का पूर्ण अधिकार है। निविदा जमा कराने व निविदा खोलने वाली दिनांक को राजकीय अवकाश होने की स्थिति में निविदा अगले कार्य दिवस वाले दिन होगी। 4. सम्पत्ति के निरीक्षण हेतु सम्पत्ति अथवा निविदा से संबंधित जानकारी हेतु इच्छुक निविदाकर्ता, आवास फाईनेंसियर्स लिमिटेड 201-202, दूसरी मंजिल, साउथ एण्ड स्क्वायर, मानसरोवर इण्डस्ट्रियल एरिया, जयपुर-302020 **सुरेश कुमार-7877607513 नोटः**- यह सूचना पत्र ऋणी/जमानती/बंधककर्ताके लिए भी नियम 9 (1) /8(6) के अधीन 15/30 दिवस का सूचना पत्र माना जायेगा कि यदि बैंक को देय राशि की अदायगी उनके द्वारा नहीं की जाती है तो उक्त संपत्ति निविदा द्वारा उपरोक्त दिनांक पर ही विक्रय की जाएगी।

स्थान : मध्य प्रदेश **दिनांक: 28.04.2026** **प्राधिकृत अधिकारी आवास फाईनेंसियर्स लिमिटेड**